❑सबद-वाणी

सबद

सिद्धाचार्य जसनाथ

कवि परिचै

राजस्थानी साहित्य रै इतिहास में मध्यकाळ री थितियां मुजब भगती री भागीरथी लावण में अठै रा संतां अर संत-संप्रदायां रौ घणौ योग रैयौ। समाज में उण बगत ईश्वर जैड़ी अदीठ सत्ता रै वास्तै विश्वास अर आत्मबळ देवण खातर अठै अनेक संत संप्रदायां री थरपणा होयी। संस्थापक संत अर वांरा चेला (शिष्य-परंपरा) आपरी साधना, अनुभव, ईश्वरीय प्रेम, जीवण मूल्यां अर नीति सूं जुड़्योड़ौ काव्य राजस्थानी साहित्य नैं सूंप्यौ। लोकभासा में सरल अर सहज भाव सूं संतां री वाणियां, सबद-साखियां, जलम- झूलणा आद रै रूप में संतां रौ औ काव्य संत-साहित्य रै नांव सूं जाणीजै, जिण रौ खास उद्देश्य लोककल्याण रौ रैयौ। आं रचानावां में काव्य-गुण, दोष अर व्याकरण रै नेमां री पालणा माथै निजर नीं राखीजी, क्यूंकै संत कवियां री दीठ मानखै री भलाई माथै ही।

संत-संप्रदायां री परंपरा में जसनाथी संप्रदाय ई अेक है। इण रा प्रवर्तक संत जसनाथजी हा। आं रौ जलम वि. सं. 1539 में काति महीनै री चानणी इग्यारस रै दिन बीकानेर जिलै रै कतरियासर गांव में होयौ। आपरै मां-बाप रै विसय में खास जाणकारी नीं लाधै। हमीरजी जाट अर वांरी जोड़ायत रूपांदे जसनाथजी नैं बेटा ज्यूं पाळ-पोसनै मोटा कर्‌या। अैड़ी मान्यता ई है कै जसनाथजी आंनैं मारग में पड़्या लाधा हा, जिणांनैं बेटा रै ज्यूं इण जोड़ै सूं लाड-प्यार मिळ्यौ। बारह बरसां री ऊमर में कांकड़ मांय सांढियां चरावती बगत बाळक जसवंत री गुरु गोरखनाथ सूं भेंट होयी। गोरखनाथजी 'गुरु सबद' दियौ। बाळक जसवंत सूं जसनाथजी नांव होयग्यौ। इण बाबत अेक उक्ति चावी है—

संवत् पनरै इक्यावनै, आसोजी सुद पाय।
वां दिन गोरखनाथ सूं, जसवंत जोग पठाय।।

जप-तप, जोग-साधना करतां वि. सं. 1563 में आसोज सुद सातम रा आप कतरियासर में समाधि लेयली। उण बगत जसनाथजी 24 बरसां रा हा। कतरियासर जसनाथी पंथ रौ पवित्र तीरथ मानीजै। जसनाथजी, विश्नोई पंथ रा प्रवर्तक संत 'जांभोजी' अर राठौड़ां री कुळदेवी भगवती 'करणीजी' रै बगत रा संत होया। आप मुगती खातर गुरु रौ मारग दरसण अर नांव-सिमरण री लगन नैं घणी महताऊ मानता। वांरी वाणियां में ब्रह्मा, विष्णु, महेश अर राम-कृष्ण रा नांव आया है, पण मुगती वास्तै वै निरगुण निराकार री उपासना नैं सिरै मानी। वै करमवाद रा खरा समर्थक हा। वांरौ मानणौ हो कै मिनख नैं उणरी करणी रौ फळ जरूर मिळै। जैड़ा करै, वैड़ा भरै अर भोगै। आपरी शिष्य-परंपरा में ई केई संत कवि ज्यूं- करमदास, देवोजी, चोखनाथजी, हरोजी, सोभोजी सोनी, पांचोजी अर 18वीं सदी में नामी संत कवि लालनाथजी होया।

पाठ परिचै

इण पाठ मांय जसनाथजी रै सबदां रा कीं अंस लिरीज्या है। जियोजी ब्राह्मण नैं तत्त्व-ग्यान करायौ, जगत-पिता परमेसर सूं भेंट रौ आध्यात्मिक मारग बतायौ। आप कैवै— 'धरती अर इंद्र रौ जोड़ौ अमर है, दूजा जोड़ा तौ बिछड़ण वाळा ई है।' वै नासवान देह, आछी करणी अर सिमरथ गुरु-ज्ञान री बात अठै करी है, जिणरा साखीधर वांरी सबद-वाणियां है।

सबद

धरती इन्द सिरो जुड़ावो, नित लग नेह सनेहा।
अमी मंडळ में बाजा बाजै, बरस सवाया मेहा।
इन्दर बरसै धरती सोसै, ऊंडा बैसैं तेहा।
धरती माता सरब संतोखै, रूप छत्तीसौं ऐहा।
कांई रे पिराणी खोज नैं खोजै, खाख हुवै भुस खेहा।
काची काया गळ-बळ जासी, कूं-कूं बरणी देहा।
हाडां ऊपर पून ढुळैली, घण हर बरसै मेहा।
माटी में माटी मिळ जासी, भसम उडै हुय खेहा।
हुय भूतळा खाख उडावै, करणी रा फळ ऐहा।
करणी हीणा नित पिछतावै, लाधै न गुरु का भेवा।
पूरै गुरु नैं जोय पिराणी, आवै पापां रा छेहा।

बुधबायरां नैं आपरा उपदेसां रौ इमरत पाय जसनाथजी हरिभजन री बात कैवै। बिन हरि नैं पिछाण्यां मिनख सींग-पूंछबायरौ ढोर है, बिना कणुका वाळौ बूमणौ है। औसर चूक्यां पछै पिछतावौ ई लारै रैवै। आप गो-रिछ्या री बात कर अहिंसा रौ पाठ पढावै। गाय रौ महत्त्व अर उणरा रुखाळा सूरज-चांद नैं बतावै—

गाय न गोखी शीसो सूअर, न चीनो हरियाई।
बै बिमुणा विमुख हांडै, कण बिन कुगस गाई।
रण में पंछी तिस्यो मरियो, ओसर चूको डाई।
सांभळ मुल्ला, सांभळ काजी, सांभळ बकर कसाई।
किण फरमाई बकरी बिरदो, किण फरमाई गाई।
गाय गोरख नैं इसी पियारी, पूत पियारो माई।
फिर चरि आवै सांझ दुहावै, राख लेवै सरणाई।
थे मत जाणो रुळी फिरै है, चांदो-सूरज गिंवाळी।

कूड़ा-कपटी, ठगोरा अर राम-नांव री भगवां चादर पैरयोड़ा धरम रा धाड़ायतां नैं सावचेत करै। साच, सील, मीठा बोल, जीव रिछ्या, परोपकार, हरिभजन अर हरिकथा साचा संतां रा गुण है। नीति-उपदेस रा कीं उदाहरण अठै देखणजोग है—

जत-सत रै'णा कूड़ न कै'णा, जोगी तणी सहनाणी।
मनकर लेखण तनकर पोथी, हरगुण लिखो पिराणी।
अमीं चवै मुख इमरत बोलो, हालो गुरु फरमाणी।
गाय'र गाडर भैंस'र छाळी, दुय दुय पिवो पिराणी।
सिरज्या देव अमीं रा कूंपा, गळबी काट न खाणी।
जे गळ काट्यां होय भलेरो, अपरो काट पिराणी।
कांटो भागां थरहर कांपो, पर जिवड़ो यूं जाणी।
कुंडा धोवै करद पलारै, रगत करै महमाणी।
सै नर जाणे सुरगे जास्यां, कोरा रह्या अयाणी।

झूठां नैं जमदूत धवैंला, भाड़ धवैं ज्यूं धाणी।
बळ-बाकळ भैरूं री पूजा, गोरख मना न माणी।
साधां नै इन्द लोके वासो, देव तणी देवाणी।
साधु हिंयर हिंडोळै हींडा, पुंता सुरग बिवाणी।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

सिरो=श्रेष्ठ। अमीं=इमरत। सौसे=सोंखणौ, चूसणौ। रूप छत्तीसो ऐहा=प्रकृति रै छत्तीसूं रूपां रौ वरणन करणौ। खोज नै खोजै=लाध्योड़ी चीज नैं कांई सोधणौ। खाख=भसमी, राख। पून=हवा, वायरौ। घण हर बरसै मेहा=चिता री अगन सूं जकौ धूंवौ उठैला वौ हवा रै योग सूं पाणी नैं सोखनै थारै हाडां माथै बादळ रै रूप में बरसैला। भूतळा=भतूळियौ, चक्रवात। वाइन्दा=झंझावात। छेहा=अंत। शीसो=खरगोश। चीनो=पिछाणणौ। हरिभाई=परम प्रभु। बिमुणा=लज्जाहीण। विमुख हांडै=उलटौ मारग पकड़नै गोता खावणा। कुगस गाई=फूस, फोफळिया, अनाज रा छिलका, थोथा। रण=अरण्य, जंगळ। विरदो=वध करौ, मारौ। सरणाई=दूध देयनै ई गाय सरण में राखै। गिंवाळी=गवाळिया, रुखाळा। जत=संयम। फरमाणी=आदेस। गाडर=भेड़। अमीं रा कूंपा=दूध रूपी अमृत भंडार। गळबी=गळा करद, छुरी। पलारै=धार देवै। महमाणी=बखाण करणौ, गुण बखाणणौ। भाड़=भड़भूंजा, धान सेकण वाळौ। हियर=हाथी-घोड़ा।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. जसनाथी संप्रदाय रा प्रवर्तक कुण हा?

(अ) जांभोजी (ब) चरणदासजी
(स) जसनाथजी (द) हरिरामदासजी

( )

2. जसनाथजी री जलमभोम रौ कांई नांव है?

(अ) पूगळ (ब) लिखमीदेसर
(स) बम्बलू (द) कतरियासर

( )

3. जसनाथजी रौ जलम कद होयौ?

(अ) वि. सं. 1539, काति री चानणी इग्यारस (ब) वि. सं. 1450, माघ री अंधारी सातम
(स) वि. सं. 1540, काति सुद इग्यारस (द) वि. सं. 1965, वैसाख सुद तीज

( )

4. संत-साहित्य रौ मूळ उद्देश्य कांई है?

(अ) कवियां में नांव कमावणौ (ब) पुरस्कार लेवणौ
(स) लोककल्याण अर जनचेतना जगावणी (द) साहित्य री समृद्धि करणी

( )

5. जसनाथजी जीवित-समाधि ली, जणां वांरी ऊमर ही—

(अ) 25 बरस (ब) 24 बरस

(स) 29 बरस (द) 39 बरस

( )

6. संत-संप्रदायां रै मूळ में किसी परंपरा चालै ?

(अ) गुरु-शिष्य परंपरा (ब) देवी-देवतावां री परंपरा

(स) देव-पुजारी परंपरा (द) खाली गुरु परंपरा

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. जसनाथी संप्रदाय रौ मोटौ तीरथ-धाम किसौ गिणीजै ?
2. जसनाथजी रौ बाळपणै में कांई नांव हो ?
3. जसनाथजी नैं 'गुरु-सबद' कुण दियो ?
4.. जसनाथजी किणनैं तत्त्व-ज्ञान दियौ हो ?
5. 'फिर चरि आवै सांझ दुहावै' किणरै सारू कथीज्यौ है ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. जसनाथी संप्रदाय रा जीव-मुगती खातर कांई विचार है ?
2. संत-काव्य रूपां में किणी तीन रा नांव लिखौ।
3. जसनाथजी परमात्मा रै किण रूप रा उपासक हा ?
4. जसनाथजी री रचनावां रा मूळ विसय कांई रैया है ?
5. 'धरती इन्द सिरो जुड़ावो' रा भाव कांई है ?
6. 'कांटो भागां थरहर कांपो' में कवि कांई कैवणी चावै ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. जसनाथजी रै जीवण अर सबद-साहित्य सूं कांई सीख मिळै ?
2. जसनाथजी रै सबद-साहित्य रा भाव आज रा जुग में ई घणा महताऊ है। इणरौ खुलासौ करौ।
3. ''संत जसनाथजी रो सबद-साहित्य सांचै अरथां में मिनख रो मारग-दरसण करै।'' इण कथन माथै आपरा विचार राखौ।
4. संत-साहित्य अर उणरा महत्त्व नैं दाखला देयनै समझावौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. कांई रे पिराणी खोज नैं खोजै, खाख हुवै भुस खेहा।
   काची काया गळ-बळ जासी, कूं-कूं बरणी देहा।
   हाडां ऊपर पून ढुळैली, घण हर बरसै मेहा।
   माटी में माटी मिळ जासी, भसम उडै हुय खेहा।।

2. माटी में माटी मिळ जासी, भसम उडै हुय खेहा।
हुय भूतळा खाख उडावै, करणी रा फळ ऐहा।
करणी हीणा नित पिछतावै, लाधै न गुरु का भेवा।
पूरै गुरु नैं जोय पिराणी, आवै पापां रा छेहा।।

3. गाय न गोखी शीसो सूअर, न चीनो हरियाई।
बै बिमुणा विमुख हांडै, कण बिन कुगस गाई।
रण में पंछी तिस्यो मरियो, ओसर चूको डाई।
सांभळ मुल्ला, सांभळ काजी, सांभळ बकर कसाई।।

4. कांटो भागां थरहर कांपो, पर जिवड़ो यूं जाणी।
कुंडा धोवै करद पलारै, रगत करै महमाणी।
सै नर जाणे सुरगे जास्यां, कोरा रह्या अयाणी।
झूठां नैं जमदूत धवैंला, भाड़ धवैं ज्यूं धाणी।।